अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "नेकी की दा'वत" से लिये गए मवाद की तीसरी क़िस्त

Riyakaar Ki Alaamaat (Hindi)

रियाकार की अ़लामात

कुल सफ़हात 35

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُسْتَطْرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

रियाकार की अ़लामात

येह रिसाला **(रियाकार की अ़लामात)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की
मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hindibook@dawateislamihind.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

येह मज़्मून "नेकी की दा'वत" के सफ़्हा 65 ता 99 से लिया गया है।

रियाकार की अ़लामात

दुआए अ़त्तार

या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई रिसाला "**रियाकार की अ़लामात**" के 35 सफ़्हात पढ़ या सुन ले उसे रियाकारी की आफ़ात से महफ़ूज़ फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के **महबूब, दानाए ग़ुयूब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है : बेशक बरोज़े क़ियामत लोगो में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जो मुझ पर सब से ज़ियादा दुरूद भेजे। (ترمذی ج۲ ص۲۷ حدیث ٤٨٤)

रियाकार पर जन्नत ह़राम है : **शहन्शाहे** दो जहान, मक्के मदीने के सुल्तान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हर **रियाकार** पर जन्नत **ह़राम** कर दी है। (جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوطی ج۲ ص۲٤۲ حدیث۵۳۲۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो ईमान के साथ दुन्या से जाए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे तो बे ह़िसाब बख़्शा जाए, अगर वोह عَزَّوَجَلَّ चाहे तो सज़ा दे कर जन्नत में दाख़िल फ़रमाए। लिहाज़ा **रियाकार पर जन्नत ह़राम है,** की शर्ह़ बयान करते हुए ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى बयान कर्दा ह़दीसे

www.dawateislami.net

पाक के तहूत फ़रमाते हैं : या'नी **रियाकार** मुसल्मान इब्तिदाअन जन्नत में दाख़िल न होगा । (فَيْضُ الْقَدِير لِلْمناوِى ج٢ص٢٨٦تحت الحديث١٧٢٥)

ख़ताएं मेरी अ़फ़्व ग़फ़्फ़ार कर दे
रियाकारियों से तू बेज़ार कर दे

रियाकारी को इस मिसाल से समझिये : **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى **रियाकारी** को इस मिसाल से समझाते हैं : म-सलन कोई शख़्स सारा दिन बादशाह के सामने खड़ा रहे जिस त़रह़ ख़ुद्दाम की आ़दत होती है लेकिन उस का **मक़्सूद** बादशाह का क़ुर्ब ह़ासिल करना न हो बल्कि उस की किसी कनीज़ को देखना हो तो येह (या'नी उस शख़्स का खड़ा होना) बादशाह के साथ यक़ीनन मज़ाक़ है । तो इस से ज़ियादा क़ाबिले ह़क़ारत व नफ़रत और क्या बात होगी कि कोई शख़्स **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत उस के कमज़ोर व लाचार बन्दे को दिखाने के लिये करे जो उस को बिज़्ज़ात (या'नी ज़ाती त़ौर पर) न नफ़्अ़ पहुंचा सकता है न नुक़्सान । (اِحياءُ الْعُلوم ج٣ص٣٦٩مُلَخَّصًا)

इख़्लास नेकियों में ऐ रब्बे करीम दे
अ़क़्ले सलीम दे मुझे क़ल्बे सलीम दे

रियाकारी की ता'रीफ़ : **रियाकारी** के बा'ज़ नुक़्सानात की मा'लूमात तो हुई, आइये ! अब येह मा'लूम करते हैं कि गुनाहों भरी रियाकारी कहते किसे हैं ! तो सुनिये : **रिया** की ता'रीफ़ येह है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की रिज़ा के इलावा किसी और इरादे से इबादत करना ।**" गोया इबादत से येह ग़रज़ हो कि लोग इस की इबादत पर आगाह हों ताकि वोह उन लोगों से माल बटोरे या लोग उस की **ता'रीफ़** करें या उसे नेक आदमी समझें या उसे **इ़ज़्ज़त** वग़ैरा दें । (اَلزَّواجر ج١ ص٧٦)

www.dawateislami.net

रियाकारी की 80 मिसालें

(जो मिसालें पेश की जा रही हैं वोह अगर्चे रियाकारी ही की हैं ताहम कई जगह निय्यत के फ़र्क़ से अह़काम में तब्दीली हो सकती है)

नमाज़ के मु-तअ़ल्लिक़ रियाकारी की 11 मिसालें

﴾1﴿ किसी शख़्स का इस लिये पाबन्दी से नमाज़ पढ़ना कि लोग उस को पक्का नमाज़ी कहें ।

﴾2﴿ किसी ह़ाफ़िज़ का तरावीह़ में इस लिये "मुसल्ला सुनाना" या'नी क़ुरआने करीम पढ़ना कि पैसे मिलेंगे ।

﴾3﴿ अपनी शादी वाले दिन या घर में मय्यित के मौक़अ़ पर सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िरी देना या बा जमाअ़त नमाज़ की पाबन्दी करना या सदाए मदीना लगाना (या'नी मुसल्मानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने के लिये घर से निकलना) ताकि लोग अश अश करें कि वाह भई ! ऐसे मौक़अ़ पर भी इस ने इन नेक कामों की छुट्टी नहीं की ! (ख़्वाह इस के इलावा बिला तकल्लुफ़ नागे़ होते हों !)

﴾4﴿ **लोगों** को **मु-तअस्सिर** करने के लिये उन के सामने इत़्मीनान और **ख़ुशूअ़ो ख़ुज़ूअ़** के साथ नमाज़ पढ़ना ।

﴾5﴿ **अगर** बड़ी रात के इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त में शब बेदारी करने या किसी रात तहज्जुद पढ़ने का मौक़अ़ मिले तो दिन में लोगों के सामने इस लिये आंखें मलना या अंगड़ाइयां वग़ैरा लेना कि सब को पता चल जाए कि येह रात सोया नहीं बल्कि नेकियों के लिये जागता रहा है ।

﴾6﴿ दूसरों की मौजू-दगी में इस लिये इशराक़ व चाश्त और अव्वाबीन व तहज्जुद अदा करना ताकि लोग नफ़्लें पढ़ने वाला तस्लीम करें ।

﴾7﴿ किसी के लिये लोगों का हुस्ने ज़न हो कि येह तहज्जुद गुज़ार और नफ़्ल रोज़ों का आ़दी है । जब कि ह़क़ीक़तन ऐसा न हो मगर उस के सामने कोई इन ख़ुसूसिय्यात के साथ तआ़रुफ़ करवाए तो येह इस निय्यत के साथ मुस्करा कर सर झुका ले कि इन पर मेरी नेकूकारी का **तअस्सुर** क़ाइम रहे ।

www.dawateislami.net

《8》 तहज्जुद में उठने की सआ़दत मिलने पर इस लिये ज़ोर ज़ोर से खांसना या ऐसे मुआ़-मलात करना कि ज़ौजा या घर के दीगर अफ़राद जाग जाएं और देख कर **मु-तअस्सिर** हों कि ओहो ! येह तहज्जुद के लिये उठा है !

《9》 नमाज़ के बा'द मस्जिद में इस लिये देर तक ठहरा रहना कि लोग नेक आदमी क़रार दें ।

《10》 नमाज़ में पहली सफ़ का इस लिये एहतिमाम करना कि लोग **मु-तअस्सिर** हों, ता'रीफ़ करें ।

《11》 अपनी पहली सफ़ या जमाअ़त रह जाने पर लोगों के सामने इज़्हारे अफ़्सोस करना ताकि लोग **मु-तअस्सिर** हों और इस को पहली सफ़ और जमाअ़त का ह़रीस समझें ।

मुबल्लिग़ीन के लिये रियाकारी की 18 मिसालें

《1》 इज्तिमाअ़ वग़ैरा में इस लिये बयान करना कि लोग इस के बयान की ता'रीफ़ करें और अच्छा मुबल्लिग़ कहें ।

《2》 मुबल्लिग़ का बयान के दौरान दिल पर चोट करने वाले जुम्ले गरज दार आवाज़ में बोलना या पुरजोश अन्दाज़ में अश्आ़र पढ़ना ताकि सामिईन ता'रीफ़ी अन्दाज़ में ना'रा लगाएं, बुलन्द आवाज़ से سُبْحٰنَ اللّٰه कहें, वाह वाह ! मरह़बा ! कह कर दाद दें, बयान की ता'रीफ़ करें, शो'ला बयान मुबल्लिग़ कहें ।

《3》 बयान में इस लिये उ़म्दा जुम्ले, दक़ीक़ अल्फ़ाज़, अ़-रबी व इंग्रेज़ी मक़ूले वग़ैरा शामिल करना कि लोग पढ़ा लिखा समझें और इस से **मु-तअस्सिर** हों ।

《4》 सुनने वाले उसे **राहे ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ **में क़ुरबानियां** देने वाला तसव्वुर करें इस लिये बयान के आग़ाज़ में मुबल्लिग़ का म-सलन इस त़रह़ के कलिमात कहना : मैं 6 दिन से मुसल्सल सफ़र पर हूं, इस वक़्त भी 13 घन्टे का सफ़र कर के यहां पहुंचा हूं, बहुत थका हुवा हूं, अभी खाना भी नहीं खाया मगर बयान करने ह़ाज़िर हो गया हूं वग़ैरहा ।

《5》 इस्लामी भाइयों को म-सलन इस त़रह़ कहना : मैं तो 25 माह से म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर हूं, वक़्फ़े मदीना हूं, इसी रोज़ से रोज़ाना बयान कर रहा हूं,

www.dawateislami.net

आज कल कई रोज़ से मुसल्सल म-दनी मश्वरों की तरकीब है, हर माह दो (या चार) म-दनी क़ाफ़िलों में तीन तीन दिन के लिये सफ़र कर रहा हूं, इतने बरस से हर माह तीन रोज़ा म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की तरकीब है और इन बातों का सबब लोगों में इ़ज़्ज़त बनाना हो कि ख़ूब शाबाश मिले, इस्लामी भाई इस की मिसालें दें, दीन के लिये ख़ूब क़ुरबानियां देने वाला कहें ।

﴾6﴿ जोश में आ कर एक ही दिन में **फ़ैज़ाने सुन्नत** से पचास या सो बार दर्स दे डालना ताकि ख़ूब वाह वाह हो, हौसला अफ़्ज़ाई के नाम पर ता'रीफ़ हो, दा'वते इस्लामी के बड़े ज़िम्मेदारान से पीठ थपक्वाने और तोह़फ़े पाने की तरकीब हो ।

﴾7﴿ किसी बड़ी शख़्सिय्यत के सामने सुन्नतों भरा बयान करने का मौक़अ़ मिले तो ख़ूब बना संवार कर उ़म्दगी से बयान करना ताकि वोह इस से **मु-तअस्सिर** हो, इस की ता'रीफ़ करे ।

﴾8﴿ मुबल्लिग़ का सियासी, हुकूमती या दुन्यवी शख़्सिय्यात के साथ मुरासिम रखना ताकि लोगों को मा'लूम हो या ख़ुद बता सके कि फ़ुलां फ़ुलां शख़्सिय्यत मुझ से **मु-तअस्सिर** है, येह लोग मुझे दुआ़ओं का कहते हैं, फ़ुलां ने तो मेरे हाथ चूम लिये, इन के यहां मेरा बड़ा एह़तिराम है ।

﴾9﴿ किसी मुबल्लिग़ का तरकीबें बनाना कि किसी त़रह़ कोई अफ़्सर या वज़ीर वग़ैरा उन के घर आ जाए ताकि लोगों पर ज़ाहिर हो कि भई ! बड़े बड़े लोग इस के अ़क़ीदत मन्द हैं इस से दुआ़ करवाने या ब-र-कत ह़ासिल करने के लिये ह़ाज़िर होते हैं ।

﴾10﴿ किसी दुन्यवी बड़ी शख़्सिय्यत को इस लिये इस्लाह़ की बात कहना या ख़त़ा पर टोकना कि लोगों पर येह असर पड़े कि वाह भई वाह ! येह तो बड़े बड़ों से मरऊ़ब नहीं होता और हुक्मे शरीअ़त बयान करने में किसी का भी लिह़ाज़ नहीं करता ।

﴾11﴿ किसी बड़े आदमी को दाढ़ी रखवा दी या बदनाम शख़्स को तौबा पर आमादा कर लिया तो अपनी ज़ात से **मु-तअस्सिर** करने के लिये बयान में या इस्लामी भाइयों में अपने इस कारनामे (या म-दनी बहार) का तज़्किरा करना ।

www.dawateislami.net

﴾12﴿ लोगों में बैठे हुए या दौराने बयान या गुफ़्त-गू करते हुए इस लिये निगाहें नीची रखना कि देखने वाले **मु-तअस्सिर** हों, ह़या से नज़रें झुकाने वाला और आंखों का कुफ़्ले मदीना लगाने वाला कहें । (ख़्वाह जब लोगों से जुदा हो तो आंखें हर त़रफ़ घूमती, फिरती और ख़ूब भटक्ती हों)

﴾13﴿ तन्हाई में ख़ाशिआ़ना नमाज़ पढ़ने या निगाहें नीची रखने की मश्क़ करना ताकि दूसरों की मौजू-दगी में भी नमाज़ में ख़ुशूअ़ क़ाइम रहे, निगाहें नीची रख सके और लोगों के दिलों में मक़ाम बना सके । (येह दूनी रिया है या'नी तन्हाई वाली मश्क़ भी रिया है कि इस का मक़्सूद रिज़ाए इलाही नहीं, बन्दों पर अपनी पारसाई का सिक्का जमाना है)

﴾14﴿ पाबन्दी से फ़िक्रे मदीना करते हुए म-दनी इन्आ़मात की ख़ाना पुरी करने और दूसरों पर म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल की ता'दाद ज़ाहिर करने से मक़्सूद येह हो कि इस की ता'रीफ़ हो, मिसाल दी जाए कि फ़ुलां म-दनी इन्आ़मात का पक्का आ़मिल है, उस का इतने इतने म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल है ।

﴾15﴿ किसी का इस लिये दीन की ख़िदमत करना, म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना, दीनी कामों के लिये ख़ूब वक़्त देना और इस की ख़ात़िर मशक़्क़तें बरदाश्त करना कि लोग इस की क़ुरबानियों की वाह वाह करें, दीनी कामों के लिये इस को ख़ूब मु-तह़र्रिक़ (ACTIVE) तसव्वुर करें ।

﴾16﴿ दुन्या के मुख़्तलिफ़ ममालिक के अन्दर राहे ख़ुदा में इस निय्यत से सफ़र करना कि इस्लामी भाई इस की क़ुरबानियों की दाद दें, इस की मिसालें बयान करें, इस को बैनल अक़्वामी मुबल्लिग़ कहें ।

﴾17﴿ इस लिये पाबन्दी से सदाए मदीना लगाना या'नी लोगों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने के लिये घर से निकलना कि इस की ता'रीफ़ हो कि येह न अंधेरे से घबराता है, न कुत्तों के भौंकने से डरता है, न ही सर्दी और बारिश की परवाह करता है नीज़ रात सोने में चाहे कितनी ही ताख़ीर हो जाए येह फिर भी **सदाए मदीना** का नाग़ा नहीं करता ।

www.dawateislami.net

﴾18﴿ **किसी** को नेकी की दा'वत इस **निय्यत** से देना कि लोग इसे मुसल्मानों का अ़ज़ीम **ख़ैर ख़्वाह** तसव्वुर करें या किसी को बुराई से इस लिये मन्अ़ करना कि लोग इस से **मु-तअस्सिर** हों कि "बड़ा **ग़ैरत मन्द** शख़्स है, बुराई देख कर बिल्कुल ख़ामोश नहीं रह सकता ।" (काश ! अपने घर में होने वाली बुराई देख कर भी ग़ैरत आया करे, दिल जला करे और इस्लाह़ की सआ़दत की कोशिश नसीब हो)

ना'त शरीफ़ पढ़ने, सुनने वालों के लिये रियाकारी की 16 मिसालें

﴾1﴿ इज्तिमाअ़ वग़ैरा में इस ग़रज़ से तिलावत करना, ना'त शरीफ़ पढ़ना कि लोग नोटें चलाएं, इसे खाना खिलाएं, लिफ़ाफ़ा पेश करें, सूटपीस ह़ाज़िर करें, आवाज़ व अन्दाज़ वग़ैरा की दाद दें, तलफ़्फ़ुज़ की अदाएगी के उस्लूब और पढ़े गए कलाम की ता'रीफ़ करें ।

﴾2﴿ ना'त शरीफ़ पढ़ते हुए मुख़्तलिफ़ अश्आ़र पर ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़ वग़ैरा से ब कसरत अश्आ़र इस लिये मिलाना कि लोग कहें : वाह वाह ! इस को तो बहुत सारे और कैसे मुश्किल मुश्किल अश्आ़र याद हैं !

﴾3﴿ किताब से देखे बिग़ैर इस लिये ना'तें पढ़ना कि सुनने वाले कहें वाह भई वाह ! इस को बहुत सी ना'तें ज़बानी याद हैं !

﴾4﴿ ना'त ख़्वान (या मुबल्लिग़) का किसी मुश्किल शे'र की इस लिये शर्ह़ बयान करना ताकि लोग इसे ज़हीन समझें और इस की मा'लूमात की दाद दें ।

﴾5﴿ नायाब कलाम तलाश कर के या किसी कलाम की नई त़र्ज़ बना कर (या चुरा कर) छुपा कर रख कर बड़ी रात वग़ैरा किसी ख़ास मौक़अ़ पर कसीर इज्तिमाअ़ में ना'त ख़्वां का इस लिये पढ़ना कि सामिई़न झूम उठें और ज़ोर ज़ोर से سُبْحٰنَ الله कह कर दाद दें, ख़ूब ना'रे लगाएं और दूसरे ना'त ख़्वान भी ता'रीफ़ करने पर मजबूर हों ।

﴾6﴿ ना'त ख़्वानी, तिलावते क़ुरआन, बयान वग़ैरा पर ब-यक वक़्त इस लिये उ़बूर ह़ासिल करना कि लोग इस को "हर फ़न मौला" कहें ।

﴾7﴿ मालदारों के यहां रग़बत के साथ जाना, उन की या किसी भी दीनी व दुन्यवी शख़्सिय्यत

www.dawateislami.net

की मौजू-दगी में इस लिये ना'त शरीफ़ पढ़ना कि मालदार "नोटें" चलाए, शख़्सिय्यत की सदाए दादो तह़सीन से नफ़्स "लज़्ज़त" पाए।

《8》 बैरूनी ममालिक में इ़ज़्ज़त व शोहरत या नज़रानों की ख़्वाहिश पर ना'त पढ़ने जाना नीज़ इस से येह भी मक़्सूद हो कि अपने नाम के साथ "बैनल अक़्वामी शोहरत याफ़्ता ना'त ख़्वां" कहा और इश्तिहारात में लिखा जाए।

《9》 **T.V.** चेनल पर इस लिये ना'त पढ़ना (या बयान करना) कि ख़ूब शोहरत मिले, लोग रास्ते में रोक कर इ़ज़्ज़त से मिलें, अपने यहां मह़ाफ़िल में मदऊ़ कर के आव भगत करें, मीडिया, या फ़ुलां चेनल का मश्हूरो मा'रूफ़ ना'त ख़्वां (या मुबल्लिग़) कहें या इश्तिहारात में लिखें, V.C.D जारी हो कि जिस से ख़ूब नाम चमके।

《10》 ना'त ख़्वां (या मुबल्लिग़) का शोहरत और वाह वाह! के लिये c.d. या v.c.d जारी करवाना।

《11》 बयान करते या सुनते हुए या दुआ़ करते या दुआ़ करवाते, या मुनाजात या ना'त शरीफ़ पढ़ते या सुनते हुए इस लिये रोने जैसी आवाज़ निकालना, रोनी सूरत बनाना, आंखें पट-पटा कर या ज़ोर से मीच कर ज़बर दस्ती आंसू छलकाना या बार बार आंखें पोंछना कि लोग इस की त़रफ़ मु-तवज्जेह हों और इसे ब निगाहे तह़सीन (या'नी ता'रीफ़ी नज़र से) देखें।

《12》 इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त में इस लिये आगे आगे बैठना, ना'तें सुन कर ख़ूब झूमना, बुलन्द आवाज़ से वाह वाह! سُبْحٰنَ اللّٰه कहना, ना'रे लगाना कि लोग आ़शिक़े रसूल समझें।

《13》 मुनाजात या ना'त शरीफ़ सुन कर चीख़ो पुकार और उछल कूद कर के ह़ाज़िरीन की तवज्जोह चाहना, अगर रिक़्क़त त़ारी हो गई थी और जोश में खड़ा हो गया था, मगर अब कैफ़िय्यत से बाहर आ जाने के बा वुजूद इस लिये खड़े खड़े हाथ पैर हिलाने का सिल्सिला जारी रखना कि लोग येह न कह सकें कि अरे इतनी जल्दी येह नॉर्मल हो गया! या इस लिये ज़मीन पर गिरना तड़पना कि लोग पकड़ें सहलाएं, होश में लाने के लिये जतन करें, पानी पिलाएं और येह "हू हू" करता हुवा आहिस्ता आहिस्ता होश में आने का अन्दाज़ इख़्तियार करे और यूं लोगों की नज़र में ख़ुद को उ़श्शाक़ में खपा ले।

《14》 ना'त वग़ैरा सुन कर इस लिये फ़िराक़े मदीना में आहें भरना बार बार मदीना मदीना कहना ताकि लोग "मदीने का दीवाना" समझें।

《15》 इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त में सिर्फ़ बिरयानी या खिचड़ा वग़ैरा खाने के लिये शिर्कत करना।

《16》 मुनाजात, ना'त व मन्क़बत वग़ैरा लिखने वाले का इस के मक़्तअ़ में अपना तख़ल्लुस इस लिये डालना कि नेक नामी हो, दाद मिले, लोगों पर छाप पड़े कि वाह भई वाह ! येह तो बहुत अच्छा शाइ़र है।

राहे खुदा में खर्च करने वालों के लिये रियाकारी की 3 मिसालें

《1》 दीनी कामों में इस लिये चन्दा देना कि लोग सख़ी कहें।

《2》 इस लिये ग़रीबों में ख़ैरात बांटना कि वोह इस के गिर्द ह़ाजी साहि़ब ! सेठ साहि़ब ! कह कर हुजूम करें, इस की मिन्नत समाजत करें, इस के सामने गिड़-गिड़ाएं।

《3》 मरीज़ों, दुखियारों और सैलाब ज़दों वग़ैरा की ख़िदमत के लिये इस लिये भागदौड़ करे कि लोग मुसीबत ज़दों का ख़ैर ख़्वाह या बेहतरीन समाजी कारकुन कहें।

रियाकारी के मु-तअ़ल्लिक़ मु-तफ़र्रक़ 32 मिसालें

《1》 फ़न्ने क़िराअत इस लिये सीखना कि लोग "क़ारी साहि़ब" कहें।

《2》 क़ारी साहि़ब का इज्तिमाआ़त में ह़ाज़िरीन की मिक़्दार के मुत़ाबिक़ (और इमाम साहि़ब का जहरी नमाज़ों में मुक़्तदियों की क़िल्लत व कसरत को मद्दे नज़र रखते हुए) तज्वीद के क़वाइ़द की रिआ़यत और आवाज़ के उतार चढ़ाव में कमी बेशी करने से मक़्सूद ह़ाज़िरीन की ख़ुशनूदी हो। (काश ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये सिर्री नमाज़ों में भी ह़स्बे ज़रूरत तज्वीद के क़वाइ़द की रिआ़यत की आ़दत बने)

《3》 अपने लिये आ़जिज़ी के अल्फ़ाज़ म-सलन फ़क़ीर, गुनहगार, नाकारा वग़ैरा इस लिये बोलना या लिखना कि लोग मुन्कसिरुल मिज़ाज समझें, आ़जिज़ी की

www.dawateislami.net

ता'रीफ़ करें । (दिल की ताईद के बिग़ैर अपने लिये ऐसे अल्फ़ाज़ की अदाएगी मुना-फ़क़त भी है)

﴾4﴿ लोगों से इस लिये पुर तपाक त़रीक़े से मिलना कि मिलन-सार और बा अख़्लाक़ कहलाए ।

﴾5﴿ दुआ़ वग़ैरा में सब के सामने रोना आ जाए तो इस लिये आंसू पोंछते रहना कि लोगों पर येह **तअस्सुर** क़ाइम हो कि येह रियाकारी से बचने के लिये जल्दी जल्दी आंसू पोंछ लेता है ।

﴾6﴿ लोगों के दिलों में जगह बनाने के लिये इस त़रह़ के जुम्ले कहना : मुझे गुनाहों से बड़ा डर लगता है, मुझे बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़ रहता है, हाए ! अंधेरी क़ब्र में क्या होगा ! आह ! क़ियामत में ह़िसाब कैसे दूंगा !

﴾7﴿ लोगों पर अपनी दुन्या से ला तअ़ल्लुक़ी और पारसाई की छाप डालने के लिये कहना : मैं तो मालदारों और शख़्सिय्यात से मिलने से बचता हूं (अगर येह फ़िक़्रा मालदार वग़ैरा को अपने से ह़क़ीर समझ कर कह रहा है तो तकब्बुर की आफ़त में भी फंसा)

﴾8﴿ किसी की मुसीबत का सुन कर इस लिये मुंह बनाना या हम दर्दाना जुम्ले कहना कि लोग रह़्म दिल कहें । (अलबत्ता दुखियारे मुसल्मान की दिलजूई की निय्यत से रिज़ाए इलाही के लिये उस के सामने ऐसा करना इ़बादत और बाइ़से सवाबे आख़िरत है)

﴾9﴿ हाथ में इस लिये तस्बीह़ रखना, और नुमायां करना, या लोगों के सामने इस लिये होंट हिला हिला कर या उन्हें आवाज़ पहुंचे इस त़रह़ दुरूद व अज़्कार पढ़ना कि नेक समझा जाए ।

﴾10﴿ **जल्वत** में (या'नी लोगों के सामने) खाते पीते, उठते बैठते वग़ैरा वग़ैरा मवाक़ेअ़ पर सुन्नतों का अच्छी त़रह़ ख़याल रखना ताकि लोग सुन्नतों पर अ़मल करने वाला क़रार दें । (काश ! अकेले में भी खाने पीने और दीगर अफ़्आ़ल में ख़ूब सुन्नतें अपनाने का ज़ेह्न बन जाए)

﴾11﴿ दा'वत में या दूसरों की मौजू-दगी में इस लिये कम खाना कि देखने वाले इसे **मुत्तबेए़ सुन्नत** (या'नी सुन्नत की पैरवी करने वाला) और **क़लीलुल ग़िज़ा** (या'नी कम खाने वाला) तसव्वुर करें । (अफ़्सोस ! येह रियाकार जब घर में या बे तकल्लुफ़ दोस्तों के दरमियान हो

www.dawateislami.net

तो दूसरों का हिस्सा भी चट कर जाए)

﴾12﴿ **किसी** को अपने नेक काम बता कर येह कहना कि "आप किसी और को मत बताना।" ताकि सामने वाला **मु-तअस्सिर** हो कि बहुत **मुख़्लिस** शख़्स है कि किसी पर अपना नेक अ़मल ज़ाहिर नहीं करना चाहता।

﴾13﴿ अपने नाम के साथ **हाफ़िज़** बोलने या लिखने का इस लिये एहतिमाम करना कि लोग ब नज़रे तहसीन देखें مَاشَآءَاللّٰه बोलें, एहतिरामन हाफ़िज़ साहिब या हाफ़िज़ जी कहें, दुआओं की इल्तिजाएं करें। (अगर रिया की निय्यत न हो तो हाफ़िज़ का अपने मुंह से ख़ुद को हाफ़िज़ बोलना लिखना मन्अ़ नहीं)

﴾14﴿ **र-मज़ानुल मुबारक** का ए'तिकाफ़ करना या सब के सामने इस लिये तिलावत करना, या ख़ूब गिड़गिड़ा कर दुआएं मांगना कि लोग नेक आदमी समझें।

﴾15﴿ **र-मज़ानुल मुबारक** का इस लिये ए'तिकाफ़ करना कि मुफ़्त में स-हरी और इफ़्तारी की तरकीब बन जाए।

﴾16﴿ मौत मय्यित के मौक़अ़ पर भागदौड़ करना नीज़ जनाज़े के जुलूस और तदफ़ीन वग़ैरा में आगे आगे रहना ताकि लोगों में नुमायां हो, अहले मय्यित **मु-तअस्सिर** हों, उन की नज़र में अच्छा इन्सान बने।

﴾17﴿ नेक कामों में ख़ूब बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेना ताकि लोग नेकियों का हरीस समझें।

﴾18﴿ अपने **दीनी कारनामे** इस लिये बयान करना कि सुनने वाले इसे दीन का बहुत बड़ा **ख़ादिम** तसव्वुर करें और इस की **अ़-ज़-मतों** के मो'तरिफ़ हों। म-सलन अपने फ़ज़ाइल का क़ाइल करने के लिये यूं कहना : मुझे तो 15 साल हो गए नेकी की दा'वत आ़म करते हुए, मैं इतने अ़र्से तक दा'वते इस्लामी की फ़ुलां फ़ुलां **ज़िम्मेदारी** पर फ़ाइज़ रहा, मैं ने इतने अ़लाक़ों बल्कि मुल्कों में जा कर **म-दनी काम** किया, मैं ने सेंकड़ों को दाढ़ी रखवाई, इमामे सजवाए, म-दनी काम करने पर आमादा किया, उन की **तरबिय्यत** की, फ़ुलां फ़ुलां ज़िम्मेदारान को भी मैं म-दनी माहोल में लाया हूं वग़ैरा वग़ैरा।

www.dawateislami.net

《19》 मुत़ा-लए़ के दौरान कोई ह़िक्मत भरा उ़म्दा म-दनी फूल मिल गया तो दूसरों से पोशीदा रख कर बड़े इज्तिमाअ़ में इस लिये बयान करना ताकि वाह वाह سُبْحٰنَ اللّٰه का शोर हो, कसीर अफ़्राद पर अपनी कसरते मा'लूमात का सिक्का बैठे और ता'रीफ़ हो ।

《20》 अपनी **फ़ी सबीलिल्लाह** इमामत या दीनी तदरीस का इस लिये दूसरों से तज़्किरा करना कि लोग इस से **मु-तअस्सिर** हों, क़द्र की निगाह से देखें ।

《21》 बड़ी रात या इज्तिमाआ़त वग़ैरा में इस लिये ख़ूब लहजे के साथ अज़ान देना कि लोग आवाज़ व अन्दाज़ की वाह वाह करें ।

《22》 ख़रीदारी करते वक़्त या उजरत पर किसी से कोई काम करवाते वक़्त अपने दीनी मन्सब म-सलन दीनी त़ालिबे इ़ल्म या ह़ाफ़िज़े क़ुरआन या इमामे मस्जिद या **मुअज़्ज़िन** या मुबल्लिग़ वग़ैरा होने का इस लिये इज़्हार करना कि वोह रिआ़यत कर दे या फिर पैसे ही न ले ।

《23》 किताब या रिसाला लिखते वक़्त इस निय्यत से इ़ब्रत अंगेज़ रिवायात व ख़ूब दिलचस्प ह़िकायात और उ़म्दा उ़म्दा म-दनी फूल शामिल करना कि पढ़ने वाले दादो तह़्सीन देने पर मजबूर हो जाएं ।

《24》 अपने ह़ज व उ़म्रे की ता'दाद, तिलावते क़ुरआन की यौमिया मिक़्दार, **र-जबुल मुरज्जब व शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** के मुकम्मल और दीगर नफ़्ली रोज़ों, नवाफ़िल, दुरूद शरीफ़ की कसरत वग़ैरा का इस लिये इज़्हार करना कि वाह वाह हो और लोगों के दिलों में एह़तिराम पैदा हो ।

《25》 छोटी बड़ी दीनी किताबों के नामों के साथ या बिग़ैर नाम बताए अपने कस्रते मुत़ा-लआ़ का इज़्हार करना ताकि इस्लामी भाई इ़ल्मे दीन का शैदाई समझें, दूसरों को इस की मिसाल दें ।

《26》 इस लिये ह़ज करना या अपने ह़ज का इज़्हार करना कि लोग ह़ाजी कहें, मुलाक़ात के लिये ह़ाज़िर हों, गिड़गिड़ा कर दुआ़ओं की इल्तिजाएं करें, गजरा पहनाएं, तह़ाइफ़ वग़ैरा पेश करें । (अगर अपनी इ़ज़्ज़त करवाना या तोह़फ़े वग़ैरा ह़ासिल करना मक़्सूद न हो बल्कि तह़दीसे

www.dawateislami.net

ने'मत वग़ैरा अच्छी अच्छी निय्यतें हों तो ह़ज व उ़म्रे का इज़्हार करने अ़ज़ीज़ों और रिश्तेदारों को जम्अ़ करने, "मह़फ़िले मदीना" सजाने की मुमा-न-अ़त नहीं बल्कि कारे सवाबे आख़िरत है)

《27》 सादाते किराम का इस लिये एह़तिराम बजा लाए, दस्त बोसी वग़ैरा करे कि सय्यिदों के दिलों में इ़ज़्ज़त पैदा हो या लोग मुह़िब्बे अहले बैत कहें।

《28》 मज़ारात की इस लिये ब कसरत ज़ियारतें करे, हर जगह उ़र्सों में पेश पेश रहे कि लोग औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का आ़शिक़ कहें।

《29》 सरकारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم का इस लिये बार बार तज़्किरा करे या ग्यारहवीं शरीफ़ की नियाज़ करे या आप की मन्क़बत में ख़ूब झूमे कि लोग ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه दीवाना समझें।

《30》 अपने पीर की इस लिये ख़ूब ख़िदमत करे, लोगों के सामने इन ख़िदमात का तज़्किरा करे, उन के क़रीब नज़र आए ताकि इसे लोग अपने मुर्शिद का मुक़र्रब, मन्ज़ूरे नज़र और ख़ादिमे ख़ास समझें, इ़ज़्ज़त करें, हाथ चूमें, नुमायां जगह पर बिठाएं, दुआ़ओं की इल्तिजाएं करें, तोह़फ़े नज़राने पेश करें, पीर साह़िब के लिये सिफ़ारिशी बनाएं।

《31》 पीरो मुर्शिद की बची हुई चीज़ दूसरों की मौजू-दगी में इस लिये झटपट खाए कि लोग "तबर्रुक का ह़रीस" तसव्वुर करें। (और अगर कोई देखता न हो तो तबर्रुक को हाथ भी न लगाए या दूसरों की त़रफ़ सरका दे)

《32》 दूसरों की मौजू-दगी में इस लिये चुपचाप रहना या इशारे से या लिख कर गुफ़्त-गू करना कि लोग सन्जीदा, ख़ामोश त़बीअ़त और ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना लगाने वाला तसव्वुर करें। (ख़्वाह घर में और बे तकल्लुफ़ दोस्तों में ख़ूब क़ह्क़हे लगाता और **शेरे बबर** की त़रह़ दहाड़ता या'नी चीख़ता हो)

रिया की ता'रीफ़ के तह़्त मज़्कूरा मिसालों पर ग़ौर कीजिये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा मिसालों को ज़ेह्न में रखते हुए **रियाकारी की ता'रीफ़** पर एक बार फिर नज़र डाल लीजिये जैसा कि **बहारे शरीअ़त** जिल्द 3 सफ़ह़ा 629 पर है : "**रिया** या'नी दिखावे के लिये (नेक) काम करना और "**सुम्आ़**" या'नी इस लिये (नेक) काम करना कि लोग सुनेंगे और अच्छा जानेंगे, येह दोनों चीज़ें बहुत बुरी हैं, इन की वजह से इ़बादत का सवाब नहीं मिलता बल्कि गुनाह होता है और येह शख़्स मुस्तह़िक़े अ़ज़ाब होता है।" **रियाकारी की ता'रीफ़** में येह भी शामिल है कि लोगों पर अपनी इ़बादत गुज़ारी की धाक बिठाना, अपनी ता'रीफ़, वाह वाह और इ़ज़्ज़त चाहना या उस नेक काम से सूटपीस, या रक़म का लिफ़ाफ़ा या खाना या मिठाई या किसी क़िस्म के नज़राने का हुसूल मक़्सूद होना। नीज़ पेश कर्दा मिसालों में "**हुब्बे जाह**" या'नी "इ़ज़्ज़त व शोहरत की **मह़ब्बत**" भी मौजूद है। क्यूं कि रियाकारी का एक बहुत बड़ा सबब "हुब्बे जाह" है।

रियाकारी की मिसालों के बारे में एक ज़रूरी वज़ाह़त : याद रहे ! रियाकारी की येह तमाम मिसालें पढ़ने सुनने वाले के अपने आप में **रियाकारी** तलाश करने के लिये हैं, किसी दूसरे को रियाकार क़रार देने के लिये नहीं क्यूं कि रियाकारी का तअ़ल्लुक़ दिल से है और किसी के दिल के ह़ालात पर हर कोई मुत्तलअ़ नहीं हो सकता। लिहाज़ा इन मिसालों पर क़ियास करते हुए किसी मुसल्मान पर **बद गुमानी** न की जाए, बद गुमानी ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है और इसी त़रह़ किसी के बारे में तजस्सुस (या'नी गुनाह की तलाश) करना, उस की पर्दा दरी करना (या'नी ऐ़ब खोलना) और उस में येह (या'नी रियाकारी की) अ़लामात तलाश करना ताकि उस को बदनाम किया जाए **येह भी ह़राम है।**

ख़ुद को रियाकारी के अ़ज़ाब से डराइये ! : बराए करम ! अपनी नेकियों को टटोलिये कि कहीं इस में **रिया** तो छुपी हुई नहीं ! क्यूं कि **रिया** च्यूंटी की चाल से भी बारीक चाल के ज़रीए अ़-मले ख़ैर में दाख़िल हो जाती है, ह़क़ीक़त येह है कि "रिया" में जो "लज़्ज़त" है वोह न उ़म्दा ग़िज़ाओं में है न ही

माल व दौलत की कसरत में, इस से बचना बहुत बहुत बहुत ज़रूरी है कि येह "लज़्ज़त" जहन्नम में पहुंचाने वाली है लिहाज़ा अगर अपने किसी नेक अ़मल में **रिया** का शाइबा (या'नी शक) भी पाएं तो तौबा करें और अपने आप को डराएं कि **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "बेशक **जहन्नम** में एक वादी है जिस से जहन्नम रोज़ाना चार सो मर्तबा **पनाह** मांगता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह वादी उम्मते मुह़म्मदिय्यह عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के उन **रियाकारों** के लिये तय्यार की है जो क़ुरआने पाक के **ह़ाफ़िज़, ग़ैरुल्लाह** के लिये **स-दक़ा** करने वाले, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के घर के **ह़ाजी** और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में **निकलने** वाले होंगे।" (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير ج١٢ ص١٣٦ حديث ١٢٨٠٣) अगर कोई इस्लामी भाई या इस्लामी बहन ख़ुद में मज़्कूरा मिसालों में से कोई मिसाल पाए तो लाज़िमन **रियाकारी का इलाज** करे मगर येह न हो कि अस्ल नेकियों और सआ़दत मन्दियों ही को छोड़ दे क्यूं कि नाक पर मख्खी बैठ जाए तो मख्खी को उड़ाया जाता है नाक नहीं काटी जाती।

बचा ले रिया से बचा या इलाही
तू इख़्लास कर दे अ़त़ा या इलाही

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 166 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "रियाकारी" का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रियाकार की अ़लामात : **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते मौलाए काएनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इर्शाद फ़रमाया : **रियाकार** की तीन अ़लामतें हैं :

《1》 **तन्हाई** में हो तो अ़मल में **सुस्ती** करे और लोगों के सामने हो तो **चुस्ती** दिखाए 《2》 **ता'रीफ़** की जाए तो अ़मल में **इज़ाफ़ा** कर दे और 《3》 **मज़म्मत** की जाए तो अ़मल में **कमी** कर दे । (اَلزَّواجِرُ عَنِ اقْتِرافِ الْكَبائِر ج ١ ص ٨٦)

लोगों में अपनी मज़म्मत करना भी रिया की अ़लामत है : **ह़ज़रते** सय्यिदुना ख़्वाजा ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : जो शख़्स किसी मज्मअ़ में अपनी **मज़म्मत** करता (या'नी ख़ुद को गुनहगार, बदकार, सियाह कार वग़ैरा कहता) है वोह दर ह़क़ीक़त अपनी **ता'रीफ़** करता है (कि लोग ऐसे शख़्स को मु-तवाज़ेअ़ और मुन्कसिरुल मिज़ाज कह कर उस की आ़जिज़ी की ता'रीफ़ करते हैं) और येह भी **रिया** की अ़लामतों में से एक **अ़लामत** है । (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّيْن ص ٢٤)

याद रहे ! अपने लिये आ़जिज़ी के अल्फ़ाज़ का इस्ति'माल उस सूरत में रियाकारी है जब कि **रियाकारी** की निय्यत हो और अब येह गुनाह है और इसी त़रह़ अगर सिर्फ़ ज़बान से आ़जिज़ी के अल्फ़ाज़ कह रहा हो और दिल में येह कैफ़िय्यत न हो तो मुना-फ़क़त है और येह भी गुनाह है ।

रोज़े के बारे में न पूछो : **ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : अपने भाई से उस के **रोज़े** के बारे में न पूछो, क्यूं कि अगर वोह कहता है कि मैं रोज़ादार हूं तो उस का नफ़्स **ख़ुश** होगा और अगर कहे कि मैं रोज़ादार नहीं हूं तो उस का नफ़्स **ग़मगीन** होगा और येह दोनों **रिया की अ़लामतों** में से हैं । (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّيْن ص ٢٤)

ज़रूरतन रोज़े का इज़्हार कर दीजिये : **ज़रूरतन** रोज़े के इज़्हार में मुज़ा-यक़ा नहीं जैसा कि फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : जब किसी को दा'वत दी जाए और वोह रोज़े से हो तो उसे चाहिये कि कह दे : **मैं रोज़ादार हूं ।** (صَحيح مُسلِم حديث ١١٥٠ ص ٥٧٩)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि नफ़्ली रोज़े का छुपाना बेहतर है

www.dawateislami.net

मगर चूंकि यहां (म-सलन किसी के घर जाना हुवा हो तो वहां) छुपाने से या साहिबे ख़ाना के दिल में अ़दावत पैदा होगी या रन्जो ग़म, (रिज़ाए इलाही की निय्यत से) मुसल्मान के दिल को ख़ुश करना भी इबादत है इस लिये रोज़े के इज़्हार का हुक्म दिया गया।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 199)

नेकी के सबब चीज़ें सस्ती मिलना : **ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन **ह़जर मक्की शाफ़ेई** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى **रियाकारी** की अक़्साम बयान करते हुए फ़रमाते हैं : इस से भी बढ़ कर **ख़फ़ी** (या'नी पोशीदा) **रिया** येह है कि (अपनी नेकियों पर) न तो लोगों के आगाह होने की ख़्वाहिश हो और न ही इबादत के ज़ाहिर होने पर ख़ुशी (पैदा होती) हो, अलबत्ता इस बात पर मसर्रत हो कि मुलाक़ात के वक़्त लोग सलाम में पहल करें और उस से ख़न्दा पेशानी से मिलें, नीज़ इस की ता'रीफ़ करें और इस की ज़रूरिय्यात पूरी करने में जल्दी करें, ख़रीदो फ़रोख़्त में इस की रिआयत करें (म-सलन वोह कुछ ख़रीदना चाहे तो उसे सस्ता दें या मुफ़्त पेश कर दें) और जब वोह लोगों के पास आए तो वोह इस के लिये जगह छोड़ दें। (उस को एह़तिराम की जगह बिठाएं, दुआओं के लिये इल्तिजाएं करें, उस के लिये आवाज़ पस्त रखें, हाथ जोड़ें, गिड़-गिड़ाएं वग़ैरा) जब कोई शख़्स इन मुआ-मलात में कोताही करे तो येह बात अपनी पोशीदा नेकियों को बड़ा समझने के सबब इस के दिल पर गिरां गुज़रे। गोया उस का नफ़्स उस इबादत के मुक़ाबले में अपना एह़तिराम चाहता है, यहां तक कि अगर येह फ़र्ज़ कर लिया जाए कि इस ने येह नेकियां नहीं कीं तो इस का नफ़्स इस एह़तिराम की ख़्वाहिश भी न रखता। (اَلزَّواجِرُ عَنِ اقْتِرافِ الْكَبائِر ج ١ ص ٩٣)

मुख़्लिसीन का रिया से बचने का अन्दाज़ : **मज़ीद** फ़रमाते हैं : लिहाज़ा मुख़्लिस बन्दे हमेशा **ख़फ़ी** (या'नी पोशीदा) **रिया** से डरते रहते हैं और दीगर लोग जितनी कोशिश अपने गुनाह छुपाने में करते हैं येह उन से ज़ियादा अपनी नेकियां छुपाने के ह़रीस होते हैं और इस की वजह सिर्फ़ येह है कि येह लोग अपनी नेकियों को ख़ालिस करना चाहते हैं ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन लोगों के सामने इन्हें अज्र अ़ता फ़रमाए क्यूं कि इन्हें इस बात पर यक़ीन है कि

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सिर्फ़ वोही आ'माल क़बूल फ़रमाता है जो **इख़्लास** के साथ किये गए हों और वोह येह भी जानते हैं कि क़ियामत के दिन लोग सख़्त मोह़ताज और भूके होंगे और इन के माल व औलाद इन्हें कुछ काम न आएंगे सिवाए इस के कि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में क़ल्बे सलीम (या'नी गुनाहों से मह़फ़ूज़ दिल) ले कर ह़ाज़िर होगा । (اَلزَّوَاجِرُ عَنِ اقْتِرَافِ الْكَبَائِر ج۱ص۹۳)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कहीं हम रियाकार तो नहीं ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि **दियानत दारी** से ख़ुद पर ग़ौर करें कि कहीं हम **तन्हाई** में इ़बादत के मुआ़-मले में **सुस्ती** और लोगों के सामने **चुस्ती** का मुज़ा-हरा तो नहीं करते ? कहीं हम नेकी करने के बा'द इस का लोगों पर **बिला ज़रूरत इज़्हार** तो नहीं कर दिया करते ? फिर अगर कोई इस पर हमारी **ता'रीफ़** कर दे तो "फूल कर" अ़मल में **इज़ाफ़ा** तो नहीं कर देते ? और **ता'रीफ़** न होने की सूरत में कहीं हम **ग़मगीन** तो नहीं हो जाते और उस अ़मल में **कमी** तो नहीं आ जाती ? कहीं ऐसा तो नहीं कि हमें लोगों के **सामने** नेकी करने में बड़ी **लज़्ज़त** मिलती हो मगर तन्हाई में **मज़ा** न आता हो ? कहीं हम लोगों के सामने (ख़ुद को सियाह कार, गुनाहगार, मुजरिम, फ़क़ीर, ह़क़ीर और आ़जिज़ व मिस्कीन वग़ैरा कह कर) अपनी **मज़म्मत** उन्हें **मु-तअस्सिर** करने के लिये तो नहीं करते ? हम कहीं अपने मुबल्लिग़ या सुन्नतों भरे म-दनी हुल्ये वग़ैरा से फ़ाएदा उठाते हुए अपने से **मु-तअस्सिर** होने वाले दुकान दारों से इस लिये तो सौदा नहीं लेते कि वोह हमें मुफ़्त में या सस्ते दामों दे ? अगर इन सुवालात के जवाबात **हां** में आएं तो फ़ौरन से पेशतर **तौबा** कर लीजिये और हुसूले **इख़्लास** की कोशिशों में लग जाइये कि कहीं ऐसा न हो कि तौबा से पहले मौत आ जाए और **रियाकारी** के सबब दोज़ख़ में डाल दिया जाए ।

रियाकारी से तौबा की ब-र-कत : मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان लिखते हैं : ख़याल रहे कि **रिया** से इ़बादत **ना जाइज़** नहीं

www.dawateislami.net

हो जाती (या'नी ऐसा नहीं कि रियाकारी से नमाज़ पढ़ी तो उसे तर्के नमाज़ समझा जाए) बल्कि **ना मक़्बूल** होने का अन्देशा होता है अगर **रियाकार** आख़िर में रिया से (सच्ची) **तौबा** करे तो उस पर रिया की इ़बादत की **क़ज़ा** वाजिब नहीं बल्कि इस तौबा की **ब-र-कत** से गुज़श्ता **ना मक़्बूल रिया की इ़बादात भी क़बूल हो जाएंगी** । मुत़्लक़न **रिया** से ख़ाली होना बहुत **मुश्किल** है **कोई शख़्स रिया के अन्देशे से इ़बादात न छोड़े बल्कि रिया से बचने की दुआ़ करे** । (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 127)

तेरे रह़्मो करम पर आस मैं ने बांध रखी है
बड़ी उम्मीद है आक़ा ! करम रोज़े जज़ा होगा

(वसाइले बख़्शिश, स. 188)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

म-रज़े रिया का इ़लाज कीजिये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम अपने दिल में इस **म-रज़े रिया की अ़लामात** महसूस करें तो बा'दे तौबा **इ़लाज** में देर नहीं करनी चाहिये । जब हम अपने **बात़िन** को **पाकीज़ा** करने की कोशिश करेंगे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारा ज़ाहिर भी **सुथरा** हो जाएगा । **शहन्शाहे मदीना,** क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "जो अपने **बात़िन की इस्लाह़** करेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के **ज़ाहिर की** (भी) **इस्लाह़** फ़रमा देगा ।" (اَلْجامِعُ الصَّغِير لِلسُّيُوطی ص۵۰۸ حدیث ۸۳۳۹)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"इख़्लास का नूर" के दस हुरूफ़ की निस्बत से रियाकारी के 10 इ़लाज

《1》 **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ के ज़रीए़ मदद त़लब कीजिये 《2》 रियाकारी के नुक़्सानात पेशे नज़र रखिये 《3》 रिया के अस्बाब का ख़ातिमा कीजिये 《4》 अपने आ'माल में इख़्लास पैदा कीजिये 《5》 निय्यत की ह़िफ़ाज़त कीजिये 《6》 दौराने इ़बादत शैत़ानी वस्वसों से बचिये

www.dawateislami.net

《7》 तन्हाई हो या हुजूम यक्सां अ़मल कीजिये 《8》 नेकियां छुपाइये 《9》 सिर्फ़ अच्छी सोह़बत में रहिये 《10》 अवरादो वज़ाइफ़ का मा'मूल बना लीजिये । अब इन मुआ़-लजात की वज़ाह़त मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

《पहला इलाज》 अल्लाह तआ़ला से दुआ़ के ज़रीए मदद त़लब कीजिये

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **है :** اَلدُّعَاءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِن **या 'नी** दुआ़ मोमिन का हथियार है । (اَلْمُستَدرَك لِلْحاكِم ج٢ ص ١٦٢ حديث١٨٥٥) शैत़ान के ख़िलाफ़ जंग में येह हथियार इस्ति'माल करते हुए ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार के दरबारे करम बार में यूं **दुआ़** कीजिये : या रब्बे मुस्त़फ़ा ! मुझे **रियाकारी** की बीमारी से **शिफ़ा** अ़त़ा फ़रमा, मेरी ख़ाली झोली **इख़्लास** की ला ज़वाल दौलत से भर दे । मेरा सामना उस दुश्मन (या'नी शैत़ान) से है जो मुझे देखता है मगर ख़ुद दिखाई नहीं देता लेकिन तू उस को **मुला-ह़ज़ा** फ़रमा रहा है, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे इस दुश्मन के **मक्रो फ़रेब** से बचा ले, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं इस बात से तेरी पनाह चाहता हूं कि **लोगों की नज़र** में तो मेरा ह़ाल बहुत **अच्छा** हो, वोह मुझे नेक और परहेज़ गार समझते रहें मगर तेरे दरबार में **सज़ा का ह़क़दार** ठहरूं ।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो
कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمّد

《दूसरा इलाज》 रियाकारी के नुक़्सानात पेशे नज़र रखिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि **रियाकारी** की आफ़ात और इस के नुक़्सानात अपने पेशे नज़र रखें क्यूं कि आदमी का दिल किसी चीज़ को उस वक़्त तक ही **पसन्द** करता है जब तक वोह उसे नफ़्अ़ बख़्श नज़र आती है मगर जब उसे उस शै

www.dawateislami.net

के **नुक़्सान देह** होने का पता चलता है तो वोह उस से बचता है म-सलन किसी इस्लामी भाई को लज़्ज़त और मिठास की वजह से **शहद** बहुत पसन्द हो लेकिन अगर उसे येह बता दिया जाए कि येह **शहद** जिसे तुम पीने जा रहे हो, इस में **ज़हर** मिला हुवा है तो वोह उस में मौजूद लज़्ज़त व मिठास नहीं **ज़हर** को देखेगा और उसे हरगिज़ हरगिज़ **नहीं पियेगा** । इसी त़रह़ लोगों पर अपना नेक अ़मल **ज़ाहिर** करने और उन की त़रफ़ से **वाह वाह** होने में यक़ीनन नफ़्स को बड़ी **लज़्ज़त** मिलती है बल्कि उस लज़्ज़त के सबब इ़बादत की मशक़्क़त भी आसान हो जाती है, लेकिन हम इस लज़्ज़त के बजाए **रियाकारी** के ज़रीए़ होने वाले **ज़हर से भी ख़त़रनाक नुक़्सानात** ज़ेह्न में रखें तो इस से बचना हमारे लिये क़दरे आसान हो जाएगा क्यूं कि **ज़हर** का नुक़्सान सिर्फ़ **दुन्या** की ह़द तक है जब कि "रिया" **आख़िरत** के लिये तबाह कार है । क्या **रियाकारी** का येही नुक़्सान कुछ कम है कि नेक अ़मल में **मशक़्क़त** उठाने के बा वुजूद सवाब से **मह़रूमी** रहे ! उस **मज़दूर** का क्या ह़ाल होगा जो सारा दिन धूप में **पसीना** बहाए और जब **मज़दूरी** मिलने का वक़्त आए तो उस की मज़दूरी येह कह कर रोक ली जाए कि तुम ने फ़ुलां फ़ुलां **ग़-लत़ी** की है इस लिये तुम्हें मज़दूरी नहीं मिलेगी । मगर आह ! **रियाकार** तो सवाब से **मह़रूमी** के साथ साथ अ़ज़ाबे नार का भी ह़क़दार है, वोह इन्सान कितना **नादान** है कि जिस शै से वोह लाखों कमा सकता है उसे सिर्फ़ वक़्ती ख़ुशी की ख़ात़िर मुफ़्त के दामों बेच दे, बिल्कुल इसी त़रह़ वोह **इ़बादत गुज़ार** कितना ना समझ है जो इ़बादत के ज़रीए़ **ख़ालिक़** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब चाहने के बजाए **मख़्लूक़** को अपना बनाने की कोशिश करे, ऐसे रियाकार ने गोया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **ना फ़रमानी** गवारा कर ली और इस के बदले लोगों से उन की **मह़ब्बत** चाही, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से होने वाली **मज़म्मत** के बदले लोगों की मिद्ह़त (या'नी ता'रीफ़) का त़ालिब हुवा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **नाराज़ी** के बदले लोगों की **रिज़ा** व ख़ुशनूदी त़लब की और बाक़ी रहने वाली **जन्नती ने'मतें** फ़ानी दुन्या के बदले बेच डालीं ! फिर सब लोगों को राज़ी रखना **दूध की नहर** खोदने के मु-तरादिफ़ है कि अगर कुछ लोग एक बात से **ख़ुश** होते हैं तो उसी बात से **नाराज़** होने वालों की भी एक ता'दाद होती है ।

www.dawateislami.net

अ़ता कर दे इख़्लास की मुझ को ने'मत
न नज़्दीक आए रिया या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 77)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दिखावे के लिये अ़मल करने वाले की मिसाल : लोगों को दिखाने और सुनाने के लिये अ़मल करने वाले की **मिसाल** उस शख़्स की त़रह़ है जो अपनी जेब में ख़ूब कंकरियां भर कर उसे नुमायां करते ख़रीदारी के लिये बाज़ार चला गया, जब लोगों ने उस की उभरी हुई जेब देखी तो ह़ैरत से कहने लगे : "वाह भई ! देखो तो सही ! इस की जेब किस क़दर रक़म से भरी हुई है !" मगर उसे लोगों की इस **वाह वाह** के इलावा कोई फ़ाएदा नहीं मिलेगा क्यूं कि वोह जूं ही दुकान दार को दाम अदा करने के लिये अपनी जेब से रक़म के बदले पथ्थर निकालेगा, **ज़लीलो रुस्वा** हो जाएगा । इसी त़रह़ **दिखाने** और **सुनाने** के लिये अ़मल करने वाले रियाकार को लोगों की त़रफ़ से बोले जाने वाले **ता'रीफ़ी कलिमात** के इलावा कोई नफ़्अ़ ह़ासिल नहीं होगा और न ही उसे क़ियामत के दिन कोई **सवाब** मिलेगा । (اَلزَّواجِرُ عَنِ اقْتِرافِ الْكَبائِر ج ١ ص ٨٦ بِتَصَرُّفٍ)

बड़ी कोशिशें की गुनह छोड़ने की
रहे आह ! नाकाम हम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 82)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾तीसरा इलाज﴿ रिया के अस्बाब का ख़ातिमा कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर बीमारी का कोई न कोई **सबब** होता है अगर सबब मिटा दिया जाए तो बीमारी भी **रुख़्सत** हो जाती है । इसी त़रह़ **रियाकारी** के भी बुन्यादी त़ौर पर **तीन अस्बाब** हैं, अगर इन तीन चीज़ों से जान छुड़ा ली जाए तो

www.dawateislami.net

اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ रियाकारी से बचना बेहद **आसान** हो जाएगा । वोह तीन अस्बाब येह हैं : **(1) हुब्बे जाह या'नी शोहरत की ख़्वाहिश (2) मज़म्मत का ख़ौफ़ और (3) माल व दौलत की हिर्स ।**

﴾1﴿ शोहरत की ख़्वाहिश : हुब्बे जाह की ता'रीफ़ है, "शोहरत व इ़ज़्ज़त की ख़्वाहिश करना ।" **हुब्बे जाह** की मज़म्मत करते हुए **हुज्जतुल इस्लाम** इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : शोहरत का मक़्सद लोगों के दिलों में मक़ाम बनाना है और येह ख़्वाहिश हर फ़साद की जड़ है । हमें चाहिये कि "हुब्बे जाह" या'नी **शोहरत की ख़्वाहिश** पर क़ाबू पाने के लिये अह़ादीसे मुबा-रका में वारिद इस के नुक़्सानात पर ग़ौरो फ़िक्र करें, चुनान्चे इस ज़िम्न में **चार फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : **﴾1﴿ अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की त़ाअ़त को बन्दों की त़रफ़ से की जाने वाली **ता'रीफ़ की मह़ब्बत** से मिलाने से बचते रहो, कहीं तुम्हारे आ'माल **बरबाद** न हो जाएं (فردوس الاخبار للديلمى ج١ص٢٢٣حديث١٥٦٧) **﴾2﴿** माल और मर्तबे की **मह़ब्बत** मोमिन के दिल में **मुना-फ़क़त** को इस त़रह़ बढ़ाती है जैसे पानी सब्ज़ा उगाता है (اِحياءُ العلوم ج٣ص٢٨٦،٣٤٢) **﴾3﴿** दो **भूके भेड़िये** बकरियों के रेवड़ में इतनी **तबाही** नहीं मचाते जितनी तबाही हुब्बे माल व जाह (या'नी माल व दौलत और इ़ज़्ज़त व शोहरत की मह़ब्बत) मुसल्मान के दीन में मचाती है (تِرْمِذِى ج٤ص١٦٦حديث٢٣٨٣) **﴾4﴿** अपनी ता'रीफ़ पसन्द करना आदमी को अन्धा बहरा कर देता है । (فردوس الاخبارللديلمى ج١ص٣٤٧حديث٢٥٤٨)

यूं फ़िक्रे मदीना कीजिये : कोशिश कर के इस त़रह़ ग़ौरो ख़ौज़ (फ़िक्रे मदीना) कीजिये : लोगों का मेरी **ता'रीफ़** में चन्द जुम्ले बोल देना या मुझे ता'रीफ़ी निगाहों से देखना, या शोहरत मिल जाना नफ़्स के लिये यक़ीनन बाइ़से **लज़्ज़त** है मगर लोगों की त़रफ़ से की जाने वाली ता'रीफ़ मुझे बरोजे़ ह़श्र बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में **काम्याबी व कामरानी** नहीं दिलवा सकती क्यूं कि येह ता'रीफ़ें करने वाले लोग तो ख़ुद ख़ौफ़े इताब से लरज़ा बर अन्दाम होंगे ।

www.dawateislami.net

इन के **ता'रीफ़** करने से न मेरा **रिज़्क़** बढ़ेगा न **उ़म्र** में इज़ाफ़ा होगा और न ही आख़िरत में कोई **मक़ाम व मर्तबा** नसीब हो सकेगा, लिहाज़ा ऐसे लोगों की त़रफ़ से की जाने वाली **ता'रीफ़ की ख़्वाहिश का क्या फ़ाएदा !** मैं क्यूं इन लोगों को **दिखाने** के लिये नेक अ़मल करूं बल्कि मैं सिर्फ़ **अपने रब** عَزَّوَجَلَّ **की रिज़ा के लिये इ़बादत करूंगा।** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

अपनी झूटी ता'रीफ़ पसन्द करना ह़राम है : इमामे अहले सुन्नत आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 21 सफ़ह़ा 597 पर लिखते हैं : अगर (कोई आदमी) अपनी **झूटी ता'रीफ़** को दोस्त रखे (या'नी पसन्द करे) कि लोग उन फ़ज़ाइल से उस की सना (या'नी ता'रीफ़) करें जो (फ़ज़ीलत व ख़ूबी) इस में नहीं, जब तो सरीह़ **ह़रामे क़त़्ई** है। **क़ालल्लाहु** (या'नी **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया)

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اَتَوْا وَّيُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۸۸﴾ (پ٤،ال عمرٰن:١٨٨)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हरगिज़ न समझना उन्हें जो ख़ुश होते हैं अपने किये पर और चाहते हैं कि बे किये उन की ता'रीफ़ हो ऐसों को हरगिज़ अ़ज़ाब से दूर न जानना और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।

आज बनता हूं मुअ़ज़्ज़ज़ जो खुले ह़श्र में ऐ़ब
हाए रुस्वाई की आफ़त में फंसूंगा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 91)

﴾2﴿ लोगों की मज़म्मत का ख़ौफ़ : **लोगों** की त़रफ़ से **मज़म्मत** होने (या'नी बुरा भला कहे जाने) का ख़ौफ़ इस त़रह़ दूर किया जा सकता है कि आप अपना ज़ेह्न बना लीजिये कि किसी के **मज़म्मत** करने (या'नी बुरा भला कहने) से न मेरी **मौत** जल्दी आ जाएगी और न मेरे **रिज़्क़** में कमी बेशी होगी, अगर मेरा **रब** عَزَّوَجَلَّ मुझ से **राज़ी** है तो फिर लोगों की मज़म्मत और इन की त़रफ़ से किया जाने वाला इज़्हारे नाराज़ी मेरा **बाल भी बीका** नहीं कर सकती। येह लोग तो ख़ुद मजबूर व **आ़जिज़** हैं

कि अपने लिये नफ़्अ़ व नुक़्सान और ज़िन्दगी व मौत के **मालिक** नहीं तो मैं क्यूं इन की मज़म्मत के **ख़ौफ़** से नेक अ़मल करूं या छोड़ूं, **मुझे सिर्फ़ अपने रब** عَزَّوَجَلَّ **के क़हरो ग़ज़ब से डरना चाहिये।**

﴾3﴿ माल व दौलत की ह़िर्स : **माल व दौलत की ह़िर्स** से नजात ह़ासिल करने के लिये अपना इस त़रह़ ज़ेह्न बनाइये कि **माल** देने और रोकने के सिल्सिले में लोगों के दिल **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला ही के क़ब्ज़े में हैं, मैं जिन लोगों की ख़ात़िर **रियाकारी** या'नी दिखावे का अ़मल करने लगा हूं वोह तो ख़ुद मजबूरे मह़्ज़ है, रिज़्क़ देने वाली ज़ात सिर्फ़ व सिर्फ़ रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ की है। जो शख़्स लोगों के माल का **लालच** रखता है वोह **ज़लीलो रुस्वा** हो जाता है और अगर उसे माल मिल भी जाए तो देने वाले के **एह़सान तले दबना** पड़ता है, तो जब **रिया काराना अ़मल** के सबब माल का मिलना भी **यक़ीनी** नहीं और ज़िल्लतो रुस्वाई का **अन्देशा** भी पूरा है तो फिर मैं क्यूं नेक कामों के ज़रीए लोगों को **मु-तअस्सिर** कर के इन से **माल** ह़ासिल करने की कोशिश करूं ? बस **मैं अपने रब** عَزَّوَجَلَّ ही **को राज़ी करने के लिये इ़बादत और हर त़रह़ के नेक काम किया करूंगा।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

पीछा मेरा दुन्या की मह़ब्बत से छुड़ा दे
या रब मुझे दीवाना मदीने का बना दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 100)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾चौथा इलाज﴿ अपने आ'माल में इख़्लास पैदा कीजिये

सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ऐ लोगो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये **इख़्लास** के साथ अ़मल करो क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ वोही आ'माल क़बूल फ़रमाता है जो उस के लिये **इख़्लास** के साथ किये जाते हैं और येह न कहो कि येह (अ़मल) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये और रिश्तेदारी के लिये। (سُنَنِ دارقطنی ج۱ ص۷۳ حدیث۱۳۰)

www.dawateislami.net

इख़्लास के बिग़ैर सवाब नहीं मिलता : **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, **"कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** सफ़ह़ा 892 ता 893 पर पारह 25 **सू-रतुश्शूरा** आयत नम्बर 20 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ۝

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जो आख़िरत की खेती चाहे हम उस के लिये खेती बढ़ाएं और जो दुन्या की खेती चाहे हम उसे उस में से कुछ देंगे और आख़िरत में उस का कुछ ह़िस्सा नहीं ।

तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान से इस आयते मुबा-रका के मुख़्तलिफ़ ह़िस्सों की तफ़्सीर मुला-ह़ज़ा हो : ﴿**जो आख़िरत की खेती चाहे**﴾ या'नी **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की रिज़ा और जनाबे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **ख़ुशनूदी** चाहे, **रिया** के लिये आ'माल न करे ﴿**हम उस की खेती बढ़ाएं**﴾ या'नी उसे ज़ियादा नेकियों की **तौफ़ीक़** देंगे, नेक काम **आसान** कर देंगे, आ'माल का **सवाब** बे ह़िसाब बख़्शेंगे । ﴿**और जो दुन्या की खेती चाहे**﴾ कि मह़ज़ **दुन्या** कमाने के लिये नेकियां करे, **इ़ज़्ज़त व जाह** (और शोहरत व वाह वाह) के लिये आ़लिम, ह़ाजी बने, (माले) **ग़नीमत** (पाने) के लिये ग़ाज़ी (बने), ﴿**और आख़िरत में उस का कुछ ह़िस्सा नहीं**﴾ क्यूं कि उस ने आख़िरत के लिये **अ़मल** किये ही नहीं । मा'लूम हुवा कि **रियाकार सवाब से मह़रूम रहता है** मगर शरअ़न इस का अ़मल दुरुस्त है, रिया की नमाज़ से फ़र्ज़ अदा हो जाएगा, मगर सवाब न मिलेगा इस लिये فِي الْاٰخِرَةِ (या'नी आख़िरत में उस का कुछ ह़िस्सा नहीं) की क़ैद लगाई ।

(नूरुल इरफ़ान, स. 774)

मुख़्लिस के आ'माल को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मश्हूर करता है : **ह़ुज़ूरे पाक,** साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अगर तुम में से कोई शख़्स किसी ऐसी सख़्त चट्टान में कोई अ़मल करे जिस का न तो कोई दरवाज़ा हो

www.dawateislami.net

और न ही **रोशन दान**, तब भी उस का अ़मल ज़ाहिर हो जाएगा और जो होना है हो कर रहेगा।" (مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج٤ص٥٧حديث ١١٢٣٠)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : इस फ़रमाने आ़ली का मक़्सद येह है कि तुम **रिया** कर के सवाब क्यूं **बरबाद** करते हो ! तुम **इख़्लास** से नेकियां करो, ख़ुफ़्या (या'नी छुप कर इ़बादत) करो। **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारी नेकियां ख़ुद बख़ुद लोगों को बता देगा लोगों के दिल तुम्हें **नेक** मानने लगेंगे। येह निहायत ही **मुजर्रब** (या'नी आज़्माया हुवा) है, बा'ज़ लोग **ख़ुफ़्या** (या'नी छुप कर) **तहज्जुद** पढ़ते हैं लोग ख़्वाह म ख़्वाह उन्हें तहज्जुद ख़्वां कहने लगते हैं। तहज्जुद बल्कि हर **नेकी का नूर** चेहरे पर नुमूदार हो जाता है जिस का दिन रात मुशा-हदा हो (या'नी देखा जा) रहा है, लोग हुज़ूरे ग़ौसे पाक (और) ख़्वाजा अजमेरी (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا) को **वली** कहते हैं, क्यूं कि रब तआ़ला कहलवा रहा है। येह है इस फ़रमाने आ़ली का ज़ुहूर। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 145)

मुख़्लिस किसे कहते हैं ? : "**इन्सान** मुख़्लिस कब होता है" इस बारे में **अस्लाफ़े किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के चार अक़्वाल मुला-ह़ज़ा हों : ﴾1﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से सुवाल हुवा : **इन्सान कब मुख़्लिस होता है ?** फ़रमाया : जब **शीर ख़्वार** (या'नी दूध पीते) **बच्चे** की त़रह़ उस की **आ़दत** हो, शीर ख़्वार बच्चे की कोई **ता'रीफ़** करे तो उसे **अच्छी** नहीं लगती और **मज़म्मत** करे तो **बुरी** नहीं लगती। तो जिस त़रह़ वोह अपनी ता'रीफ़ व मज़म्मत से **बे परवाह** होता है इसी त़रह़ इन्सान जब अपनी ता'रीफ़ व मज़म्मत की परवाह न करे तो **मुख़्लिस** कहा जा सकता है (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص٢٤) ﴾2﴿ ह़ज़रते ज़ुन्नून मिसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى से किसी ने पूछा : **आदमी को किस त़रह़ मा'लूम हो कि वोह मुख़्लिस है ?** फ़रमाया : **जब वोह आ'माले सालिह़ा** (या'नी नेकियों) **में पूरी कोशिश सर्फ़ कर देने के बा वुजूद इस बात को पसन्द करे कि मैं मुअ़ज़्ज़ज़** (या'नी इ़ज़्ज़त वाला) **न समझा जाऊं** (اَيضاً ص٢٣) ﴾3﴿ किसी इमाम से पूछा गया : **मुख़्लिस कौन है ?** फ़रमाया : मुख़्लिस वोह है जो अपनी **नेकियां** इस त़रह़ **छुपाए** जिस त़रह़ अपनी **बुराइयां छुपाता है** (اَلرَّوَاجِر ج١ص ١٠٢) ﴾4﴿ एक और बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से अ़र्ज़ की गई : इख़्लास की ह़द कहां

www.dawateislami.net

तक है ? फ़रमाया : येह कि **तुम्हें येह ख़्वाहिश ही न रहे कि लोग तुम्हारी ता'रीफ़ करें ।** (اَیضاً)

यक्सां हो मद्ह़ो ज़म मुझ पे कर दो करम

न ख़ुशी हो न ग़म ताजदारे ह़रम

(वसाइले बख़्शिश, स. 271)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾पांचवां इलाज﴿ नियत की ह़िफ़ाज़त कीजिये

रियाकारी से बचने के लिये अपनी निय्यत की ह़िफ़ाज़त ज़रूरी है कि आप जो अ़मल करने लगे हैं उस का मक़्सद क्या है ! अगर **दिखावे** की बू पाएं तो फ़ौरन अपनी निय्यत की इस्लाह़ फ़रमाएं और येह ज़ेह्न बनाएं कि सिर्फ़ वोही अ़मल मक़्बूल होगा जो रिज़ाए इलाही के लिये किया जाएगा अगर मैं ने लोगों को दिखाने या सुनाने की ख़ातिर कोई नेकी की तो क़बूल होना तो एक त़रफ़ रहा, जहन्नम के अ़ज़ाब का ह़क़दार हो जाऊंगा ! शैत़ान अगर्चे लाख रुकावट डाले मगर रिया और दिखावे की निय्यत से बचना और अच्छी निय्यत करनी ही होगी । ह़ज़रते सय्यिदुना नुऐम बिन ह़म्माद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْجَوَاد फ़रमाते हैं : हमारी पीठ का कोड़ों की मार खाना हमारे लिये (अच्छी) **निय्यत** करने के मुक़ाबले में आसान तर है । (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص٢٥)

निय्यत की ता'रीफ़ : **निय्यत** लु-ग़वी त़ौर पर दिल के **पुख़्ता** (या'नी पक्के) **इरादे** को कहते हैं और शरअ़न इ़बादत के इरादे को **निय्यत** कहा जाता है । (माख़ूज़ अज़ नुज़्हतुल क़ारी शर्हे सह़ीहुल बुख़ारी, जि. 1, स. 226) निय्यत की **अहम्मिय्यत** दिल में उजागर करने के लिये सात रिवायात मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

"चल मदीना" के सात ह़ुरूफ़ की निस्बत से अच्छी निय्यत की फ़ज़ीलत पर मब्नी 7 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿ आ'माल का दारो मदार **निय्यतों** पर है और हर शख़्स के लिये वोही है जिस की वोह **निय्यत** करे (بُخاری ج ١ ص ٦ حدیث ١) ﴾2﴿ **मुसल्मान की निय्यत उस के**

www.dawateislami.net

अ़मल से बेहतर है (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير ج٦ ص١٨٥ حديث ٥٩٤٢) ﴾3﴿ सच्ची निय्यत सब से **अफ़्ज़ल अ़मल** है (اَلْجَامِعُ الصَّغِير ص٨١ حديث ١٢٨٤) ﴾4﴿ **अच्छी निय्यत** बन्दे को **जन्नत** में दाख़िल करेगी (اَلْفِرْدَوس بمأثور الْخطّاب ج٤ ص٣٠٥ حديث ٦٨٩٥) ﴾5﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आख़िरत की **निय्यत** पर दुन्या **अ़ता** फ़रमा देता है लेकिन दुन्या की **निय्यत** पर आख़िरत **अ़ता** फ़रमाने से इन्कार कर देता है (اَلزُّهْد لِابن مُبارَك ص١٩٣ حديث ٥٤٩) ﴾6﴿ **सच्ची निय्यत** अर्श से मुअ़ल्लक़ है पस जब कोई बन्दा **सच्ची निय्यत** करता है तो अ़र्श **हिलने** लग जाता है, फिर उस बन्दे को **बख़्श** दिया जाता है (تاريخ بغداد ج١٢ ص٤٤٤ حديث ٦٩٢٦) ﴾7﴿ जिस ने **नेकी** का **इरादा** किया फिर उसे न किया तो उस के लिये एक **नेकी** लिख्खी जाएगी । (صَحِيح مُسلِم ص٧٩ حديث ١٣٠)

अच्छी अच्छी निय्यतों का हो ख़ुदा जज़्बा अ़ता
बन्दए मुख़्लिस बना, कर अ़फ़्व मेरी हर ख़ता

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾छटा इलाज﴿ दौराने इबादत शैत़ानी वस्वसों से बचिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इख़्लास क़बूलिय्यत की कुन्जी (चाबी) है, लिहाज़ा जिस त़रह़ नेक अ़मल से पहले दिल में **इख़्लास** होना ज़रूरी है इसी त़रह़ हर नेकी व इबादत के दौरान इसे क़ाइम रखना भी ज़रूरी है क्यूं कि शैत़ान मुसल्सल हमारे दिल में **वस्वसे** डालने की कोशिश में लगा रहता है । ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : जो शख़्स अपने आ'माल में साहिर (या'नी जादूगर) से ज़ियादा **होशियार** न होगा (शैत़ान के झांसे में आ कर) ज़रूर **रियाकारी** में फंस जाएगा । (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص٢٣)

www.dawateislami.net

इबादत में वस्वसों से नजात के लिये तीन चीज़ें ज़रूरी हैं : **इबादत** के दौरान शैत़ानी वस्वसों से छुटकारे के लिये तीन चीज़ें ज़रूरी हैं : ﴾1﴿ उस वस्वसे को पहचानना ﴾2﴿ उसे ना पसन्द करना और ﴾3﴿ उसे क़बूल करने से इन्कार करना। म-सलन किसी ने अच्छी अच्छी **निय्यतें** कर के नमाज़े तहज्जुद शुरूअ़ की, अब दौराने नमाज़ शैत़ान ने दिल में **रियाकारी** का वस्वसा डाला कि जब लोगों को मेरी तहज्जुद गुज़ारी का पता चलेगा तो वोह मुझ से बहुत **मु-तअस्सिर** होंगे, अब इस वस्वसे को फ़ौरी त़ौर पर **पहचानना** कि येह शैत़ान की त़रफ़ से है उस नमाज़ी के लिये बहुत ज़रूरी है। फिर इसे **ना पसन्द** भी जाने कि **ख़ालिक़** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये किये जाने वाले अ़मल से **मख़्लूक़** को **मु-तअस्सिर** करने की कोशिश करना **ग़-ज़बे इलाही** को दा'वत देने के मु-तरादिफ़ है, फिर उस **वस्वसे से अपनी तवज्जोह हटा ले।** अगर्चे येह काम **मुश्किल** ज़रूर है मगर **ना मुम्किन** नहीं, आग़ाज़ में येह काम बेह़द कठिन मह़सूस होता है, लेकिन जब तकल्लुफ़ कर के एक अ़र्से तक इस पर **सब्र** करे तो **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो करम और हुस्ने तौफ़ीक़ से येह काम **आसान** हो जाता है, हमारा काम **कोशिश** करना है, काम्याबी देने वाली ज़ात **रब्बे काएनात** عَزَّوَجَلَّ की है : पारह 21 **सू-रतुल अ़न्क़बूत** आयत नम्बर 69 में **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۶۹﴾

(پ۲۱،العنکبوت:۶۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे और बेशक **अल्लाह** नेकों के साथ है।

तू शैत़ां के शर से बचा या इलाही
हो दिल वस्वसों से सफ़ा या इलाही
मुझे वस्वसों से बचा या इलाही
हो शर दूर शैत़ान का या इलाही

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

《सातवां इलाज》 तन्हाई हो या हुजूम यक्सां अ़मल कीजिये

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम, **नूरे मुजस्सम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुकर्रम है : जब बन्दा अ़लानिया नमाज़ पढ़े तो भी **अच्छी** और ख़ुफ़्या (या'नी पोशीदा) नमाज़ पढ़े तो भी **अच्छी** तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि येह मेरा **सच्चा बन्दा है।** (سُنَنِ اِبن ماجه ج٤ ص٤٦٨ حديث٤٢٠٠)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी इस बन्दे में **रियाकारी** नहीं है येह बन्दा **मुख़्लिस** है अगर रियाकार होता तो **अ़लानिया** नमाज़ **अच्छी** त़रह़ पढ़ता **ख़ुफ़्या** (या'नी तन्हाई) में **मा'मूली** त़रह़, जब येह ख़ुफ़्या (या'नी तन्हाई) में भी अच्छी त़रह़ पढ़ता है तो **मुख़्लिस** ही है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 140)

इमाम सिर्री नमाज़ में भी क़वाइदे तज्वीद की रिआ़यत करे : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि तन्हाई में हों या इस्लामी भाइयों के दरमियान, दोनों जगह अ़मल को **यक्सां** अन्दाज़ में करने की ख़ूब कोशिश करें। म-सलन जिस **ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़** से लोगों के सामने **नमाज़** पढ़ते हैं वोही अन्दाज़ अकेले में भी **क़ाइम** रखें, इमाम साह़िब को चाहिये कि जिस त़रह़ जहरी (या'नी बुलन्द आवाज़ वाली क़िराअत की) नमाज़ों में क़वाइदे तज्वीद की रिआ़यत करते हैं, सिर्री (या'नी आहिस्ता क़िराअत वाली) नमाज़ों में भी येही करें। नीज़ हम जो काम लोगों के सामने करना पसन्द नहीं करते तन्हाई में भी न किया करें। शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुबीन है : "जो काम लोगों के **सामने** करना **ना पसन्द** करते हो वोह **तन्हाई** में भी **न** किया करो।" (اَلْجامِعُ الصَّغِير لِلسُّيُوطی ص٤٨٧ حديث٧٩٧٣)

बचा मुझ को शैत़ां की मक्कारियों से
ख़ुदा बहरे ह़ैदर रियाकारियों से

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾आठवां इलाज﴿ नेकियां छुपाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! काश ! येह सआ़दत मिल जाए कि हम अपनी नेकियों को भी इस त़रह़ छुपाएं जिस त़रह़ अपने गुनाहों को छुपाते हैं और बस इसी को काफ़ी समझें कि **अल्लाह** तआ़ला हमारी नेकियां जानता है । बिल ख़ुसूस पोशीदा नेकी करने के बा'द नफ़्स की ख़ूब निगरानी की जाए क्यूं कि हो सकता है येह इ़बादत ज़ाहिर करने की ह़िर्स नफ़्स के अन्दर जोश मारे और वोह कुछ इस त़रह़ फंसाने की तरकीब करे कि अपनी येह इ़बादत लोगों पर ज़ाहिर कर दे कि इस त़रह़ नेकियां छुपाए रखने से जब लोगों को तेरे मक़ाम व मर्तबे का इ़ल्म ही नहीं होगा तो वोह बेचारे तेरी पैरवी से मह़रूम रह जाएंगे, ऐसे में तू लोगों का मुक़्तदा (या'नी पेशवा व रहनुमा) कैसे बनेगा ? तेरे ज़रीए़ नेकी की दा'वत कैसे आ़म होगी ? वग़ैरा । ऐसी सूरत में **अल्लाह** तआ़ला से इस्तिक़ामत व साबित क़दमी की दुआ़ करनी चाहिये और अपने अ़मल के बदले में मिलने वाली जन्नत की अ़ज़ीमुश्शान दाइमी ने'मत याद करनी चाहिये । ख़ुद को डराना चाहिये कि जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत के ज़रीए़ उस के बन्दों से अज्र (या'नी बदले) का त़ालिब होता है उस पर **अल्लाह** तआ़ला का ग़ज़ब नाज़िल होता है और येह भी हो सकता है कि दूसरों के सामने अपना अ़मल ज़ाहिर करने की वजह से वोह उन के नज़्दीक तो मह़बूब (या'नी प्यारा) हो जाए लेकिन **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक उस का मक़ाम व मर्तबा गिर जाए ! तो कहीं इस त़रह़ मेरा अ़मल भी ज़ाएअ़ न हो जाए ! फिर नफ़्स को इस त़रह़ समझाए कि मैं किस त़रह़ इस अ़मल को लोगों की ता'रीफ़ के बदले बेच दूं वोह तो ख़ुद आ़जिज़ व लाचार हैं न तो वोह मुझे रिज़्क़ दे सकते हैं और न ही मौत व ह़यात के मालिक हैं ।

पोशीदा अ़मल अफ़्ज़ल है : **पोशीदा** अ़मल के फ़ज़ाइल पर भी ग़ौर करे जैसा कि **नबिय्ये** पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़ज़ीलत निशान है : **ज़ाहिरी अ़मल के** मुक़ाबले में **पोशीदा अ़मल अफ़्ज़ल** है । (شُعَبُ الْاِيمان ج٥ ص٣٧٦ حديث٧٠١٢)

www.dawateislami.net

अ़मल के इज़्हार की एक सूरत : **ऐसा** शख़्स कि जिस की पैरवी की जाती हो वोह लोगों को रग़बत दिलाने की निय्यत से ऐसा अ़मल ज़ाहिर कर सकता है जब कि इस इज़्हार में रिया की आमैज़िश न हो। इस त़रह़ इख़्लास के साथ अ़मल के इज़्हार से वोह सवाबे अ़ज़ीम का ह़क़दार है। चुनान्चे एक ह़दीसे पाक में है : जब अ़लानिया अ़मल की पैरवी की जाए तो वोह (ज़ाहिर किया जाने वाला अ़मल) छुप कर किये जाने वाले अ़मल से अफ़्ज़ल है। (اَیضاً)

आ़जिज़ी की इन्तिहा : **अपना** पोशीदा अ़मल तह़्दीसे ने'मत या दूसरों की रग़बत के लिये ज़ाहिर करने से पहले ख़ूब अच्छी त़रह़ ग़ौर कर लेने की ह़ाजत है कि कहीं येह शैत़ान की चाल तो नहीं ! कहीं मैं रियाकारी में तो नहीं जा पड़ूंगा। इस ज़िम्न में हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن की इन्किसारी बे मिसाल है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं मैं ने जिस क़दर आ'माल **ज़ाहिर** कर के किये हैं, उन को न होने के बराबर समझता हूं क्यूं कि जब लोग देख रहे हों उस वक़्त **इख़्लास** का बाक़ी रखना हम जैसों की क़ुदरत से बाहर है। (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّيْن ص ٢٦)

बसरे की हर गली से तिलावत की आवाज़ आती थी : **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى लिखते हैं : किसी ज़माने में बसरे की हर गली से ज़िक्रे इलाही और तिलावते क़ुरआने करीम की आवाज़ें **बुलन्द** होती थीं और इस त़रह़ लोगों को ज़िक्रो अज़्कार की रग़बत मिलती थी। इत्तिफ़ाक़न उस ज़माने में किसी आ़लिम साह़िब ने **"रिया की बारीकियों"** के बारे में एक रिसाला तह़रीर फ़रमाया, तो तमाम लोगों ने बुलन्द आवाज़ से ज़िक्रो तिलावत करना बन्द कर दिया। इस पर कई लोगों ने कहा : काश ! उन आ़लिम साह़िब ने येह **रिसाला** न लिखा होता ! (کیمیائے سعادت ج٢ ص ٦٩٢)

www.dawateislami.net

अब तो न किये हुए अ़मल में भी रियाकारी की जाती है : ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हम ने पहले तो लोगों को इस ह़ालत में पाया था कि वोह उन नेकियों में **रिया** करते थे जो वोह करते थे और अब लोगों की येह ह़ालत है कि वोह उन बातों में **रिया** करते हैं जो वोह नहीं करते । (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص ٢٥) या'नी पहले लोग मख़्लूक़ को राज़ी करने के लिये नेक काम करते थे और अब नेक काम भी नहीं करते बल्कि नेकों की सूरत बना कर इस का यक़ीन दिलाना चाहते हैं कि वोह नेक काम करते हैं पस येह पहले के **रियाकारों** से भी बदतर हैं ।

नेकियां छुप कर करें ऐसी हिदायत दे ख़ुदा
हम को पोशीदा इबादत की तू लज़्ज़त दे ख़ुदा

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾नवां इलाज﴿ सिर्फ़ अच्छी सोह़बत में रहिये

अल्लाह तआ़ला के मुख़्लिस बन्दों और आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत अगर नसीब हो जाए तो ऐन सआ़दत है, उन के क़ुर्ब और उन की त़रफ़ से वक़्तन फ़ वक़्तन मिलने वाली नेकी की दा'वत की ब-र-कत से दीगर फ़वाइद के साथ साथ اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **रियाकारी का इलाज** भी होता रहेगा । येह याद रहे कि सिर्फ़ व सिर्फ़ अच्छी सोह़बत इख़्तियार करनी चाहिये जब कि बुरे लोगों के साए से भी भागना चाहिये । मक्की म-दनी सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : अच्छे और बुरे मुसाह़िब की मिसाल, मुश्क (या'नी कस्तूरी) उठाने वाले और भट्टी धोंकने वाले की त़रह़ है, कस्तूरी उठाने वाला तुम्हें **तोह़फ़ा** देगा या तुम उस से **ख़रीदोगे** या तुम्हें उस से उ़म्दा **ख़ुश्बू** आएगी, जब कि भट्टी धोंकने वाला

www.dawateislami.net

या तुम्हारे कपड़े **जलाएगा** या तुम्हें उस से **ना गवार** बू आएगी । (صحیح مسلم ص١٤١٤ حدیث ٢٦٢٨)

चंगे बन्दे दी सोह़बत यारो जीवीं दुकान अ़त्तारां सौदा भावें मुल न लय्ये हुल्ले आन हज़ारां

बुरे बन्दे दी सोह़बत यारो जीवीं दुकान लोहारां कपड़े भावें कुंज कुंज बय्ये चिंगा पैन हज़ारां

(या'नी अच्छे शख़्स की सोह़बत अ़त्तार (य'नी इत्र फ़रोश) की दुकान की त़रह़ है कि जहां से आदमी कुछ न भी ख़रीदे मगर उसे ख़ुश्बू तो आ ही जाती है और बुरे शख़्स की सोह़बत लोहार की दुकान की मिस्ल है, जहां अपने कपड़ों को जितना भी समेट कर रखें, चिंगारियां उस तक पहुंच ही जाती हैं)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

الصلوٰۃ والسلام علیک یا رسول اللہ

इख़्लास हो तो "थोड़ा" अ़मल भी "बहुत" है ।

18 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म

1422 हि.

M.R.P. ₹ -/00

DAWAT-E-ISLAMI

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372

Faizane Madina, Teen koniya Baghicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200

421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi

011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 *T&C Apply

feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net